International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-4
August- 2015
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

''शिक्षक प्रशिक्षण की सृजनात्मकता, दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

डॉ इन्दू सिंह
शोध निर्देशक
पी0आई0ई0टी0 मेरठ

अजय कुमार
शोधार्थी
साईनाथ विश्वविद्यालय

प्रस्तावना–

भारत अपनी संस्कृति एवं शिक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध रहा है। इसका एकमात्र आधार शिक्षा ही रहा है। शिक्षा रूपी प्रकाश की ज्योति को फैलाने वाला शिक्षक ही मुख्य रूप से है। वैदिक काल में शिक्षक अर्थात् 'गुरु' अति विद्वान, स्वाध्यायी, धर्मपरायण तथा अतिसंचयी भी होते थे। उस समय उन्हें समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। वे देव रूप में प्रतिष्ठित थे। इन्हें धियावसु (जिसकी बुद्धि ही धन है) सत्यजन्मा (सत्य को जाननेवाला) और विश्ववेत्ता (सर्वज्ञ) आदि विशेषणों से सम्बोधित किया जाता था। ये अपने गुरुकुलों के पूर्ण स्वामी होते थे, पर पूर्ण स्वामित्व के साथ उत्तरदायित्व जुड़ा था। ये अपने गुरुकुलों की सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए उत्तरदायी होते थे। आवास, भोजन, स्वास्थ्य आदि सभी सुविधाओं के साथ–साथ उचित दीक्षा की व्यवस्था भी करते थे।

''विद्यालय एक उद्यान है तथा शिक्षक एक सर्तक माली के समान है जिस प्रकार पौधों के विकास के लिए आवश्यकतुसार उसे कडी धूप व सिंचाई आदि की सुव्यवस्था उचित ढंग से सुनियोजित करता है उसी प्रकार एक शिक्षक अपने छात्रों के चहुॅमुखी एवं सर्वागीण विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है।''

राधाकृष्णन महोदय के विचार में शिक्षायोजना की सफलता शिक्षकों की योग्यता, कर्तव्यनिष्ठा तथा जवाबदेहीता पर आधारित बताया। साथ ही उन्होंने यह भी प्रकट किया कि योग्य व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ही शिक्षण कार्य को करें। शिक्षकों के वेतनमान और सेवाशर्तो में सुधार करने की बात की।

भारतीय शिक्षा के इतिहास के विषय में समय–समय पर सभी ने अपना मत व्यक्त किया– प्रसिद्ध यूरोपीय शिक्षाशास्त्री व दार्शनिक जान लाक महोदय ने भी अनेक गुण शिक्षक के बारें में बताया।

1. शिक्षक का सबसे बड़ा कार्य मस्तिष्क का निर्माण करना है।
2. शिक्षक छात्रों के उदत्त मूल्यों के अनुकरण करना सीखायें।
3. शिक्षक का सबसे पवित्र कर्तव्य है कि यह छात्रों को उचित कर्तव्य करने, अर्थात उच्च कार्यों हेतु प्रेरित करें। इतना ही नही लाक महोदय की यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है–

''सम्मान और अवहेलना मन के सर्वाधिक शक्तिशाली प्रलोभन है अतः शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों को सही रास्ते पर लाने के लिए उनका तिरस्कार करें अथवा सम्मान करें।'' सर्वथा उपयुक्त है।

''शिक्षक के राष्ट्र तथा चर्च की अपेक्षा अपने शिष्य के प्रति प्रेम होना चाहिए यदि ऐसा नही है तो वह आदर्श शिक्षक नहीं है।''

अध्यापक को चाहिए कि वह कोई उबा देने वाली बात छात्रों पर न थोपे। उसे विशेष योग्यतायुक्त होने के लिए प्रशिक्षित होना चाहिए। इसके लिए पूर्वाग्रहों से भ्रष्ट होना पड़ेगा और स्वतंत्र चिन्तन करना होगा। छात्रों को मान्यता से विपरीत मत प्रकट करने की छूट देना अध्यापक का कर्तव्य है।

विदेशी शिक्षाविदों तथा दार्शनिकों की तरह भारतीय शिक्षाविद् भी एक योग्य शिक्षक के विषय में अपना स्वतन्त्र विचार प्रकट किया।

सर्वप्रथम जगद्गुरु शंकराचार्य महोदय के विचारों को उन्हीं के शब्दों में देखते है जो निम्नवत् है–

''वेदान्त दर्शन में शिक्षक को महत्वपूर्ण माना गया है, प्रकृतिवादी शिक्षक के स्थान को महत्वहीन मानते है, प्रयोजनवादी शिक्षक को मार्गदर्शक एवं पथ प्रदर्शक मित्र के रूप में स्वीकार करते है। एवं आदर्शवादी शिक्षा प्रणाली के शिक्षक के स्थान को महत्वपूर्ण माना गया है। वेदान्त दर्शन भी गुरु के बिना ज्ञान न होने की बात कही है।''

भारत में शिक्षक निर्धनता का शिकार है, उपेक्षित है और असुरक्षित है। शिक्षक समाज आर्थिक दृष्टि से निर्धन है। सामाजिक दृष्टि से उसका दर्जा नीचा है। व्यावसायिक दृष्टि से उसका कार्य कठोर व परिश्रमी है और प्रशासनिक दृष्टि से उसके साथ बहुत भद्दा व्यवहार किया जाता है।

यद्यपि इस दिशा में पहले से काफी सुधार हुआ है किन्तु आज भी शिक्षकों के वेतन तथा शिक्षण दशाओं आदि की अनेक समस्याएं है जो काफी गम्भीर है।

अतः कहा जा सकता है का शिक्षक पद अति महत्वपूर्ण है। शिक्षक का कर्तव्य है कि वह बालक के सर्वागीण विकास कर समाज व राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान दें।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर आपसी अन्तर्सम्बन्धों के माध्यम से नित नई वस्तुओं को देखकर सदैव वह अपने व्यवहार में सदैव परिवर्तन करके वह अपनी सृजनात्मक शक्तियों

का विकास करता है। मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन की मुख्य भूमिका शिक्षा के द्वारा होता है। शिक्षा के द्वारा ही सृजनात्मक शक्तियों का विकास होता है। प्रत्येक मनुष्य में सृजनात्मक क्षमता भिन्न–भिन्न होती है लेकिन शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति में व्याप्त जन्मजात भिन्नताओं को अधिक रूप में कम करता है। वर्तमान युग में सृजनात्मक या सृजनात्मकता किसी भी मनुष्य या समाज का इतना महत्वपूर्ण कारक बन गया है जो किसी भी समाज, देश के विकास में पर्याय बन चुकी है।

प्राचीनकाल में यह मत प्रचलित था कि जो मनुष्य ईश्वरीय शक्ति का जितना अधिक कृपा पात्र होता है वह उतना ही अधिक सृजनशील होता है। उसके अतिरिक्त यह भी मत प्रचलित था कि सृजनात्मकता जन्मजात मानसिक शक्ति है जो जन्म के समय मनुष्य को प्राप्त होती है। वर्तमान समय में शिक्षा के द्वारा सृजनात्मक शक्तियों का विकास किया जा सकता है।

वर्तमान युग में नवीनतम् आविष्कार, साहित्य रचना, भौतिक वस्तुओं का निर्माण तथा मानव की अन्य उपलब्धियाँ सृजनात्मक शक्ति एवं कल्पना का परिणाम है। आज विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में, औद्योगिकी एवं नगरीकरण के विकास के फलस्वरूप मानव जीवन और समाज में नित्य नया परिवर्तन दिखाई देता है। इनमें से अधिकांश आविष्कारों के पीछे जहाँ वैज्ञानिकों ने अथक परिश्रम किया है वहीं उनकी सृजनात्मकता का भी योगदान कम नहीं है। पहले माना जाता था कि केवल लेखक, कवि, चित्रकार, संगीतकार आदि व्यक्ति ही सृजनात्मक होते है परन्तु अब यह माना जाने लगा है कि मनुष्य में प्रत्येक क्षेत्र के बारें में सृजनात्मकता पाई जाती है चाहे वह किसी भी व्यक्ति में कम या अधिक मात्रा में हो। मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने में नवीन आविष्कार तथा समस्या का समाधान खोलने के कार्य में सृजनात्मकता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। आज के जटिल युग या समाज में वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों को पाने के लिए सृजनात्मक मनुष्यों का होना राष्ट्र की प्रमुख आवश्यकता बन गयी है।

सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी के **'क्रियेटिवटी'** (ब्तमंजपअपजल) से बना है। इस शब्द के समानान्तर विधायिका, उत्पादन रचनात्मकता, डिस्कवरी आदि का प्रयोग होता है। फादर कामिल बुल्के ने 'क्रियेटिक' शब्द के समानान्तर सृजनात्मक, रचनात्मक सर्जक शब्द बताये है। डा0 रघुवीर ने इसका अर्थ सर्जन, उत्पन्न करना, सर्जित करना, बनाना बताया है।

सृजन वह अवधारणा है जिसमें उपलब्ध साधनों से नवीन या अनजानी वस्तु, विचार या धारणा को जन्म दिया जाता है। सृजनात्मक से अभिप्राय है रचना सम्बन्धी योग्यता, नवीन उत्पाद की रचना। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सृजनात्मक स्थिति में अन्वेषणात्मक होती है।

डा0 रूश के अनुसार–

''सृजनात्मकता मौलिकता वास्तव में किसी भी प्रकार की क्रिया में घटित होती है।''

क्रो एवं क्रो के अनुसार– *''सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।''*

जेम्स डेवर का कथन है, *''सृजनात्मकता मुख्यतया नवीन रचना या उत्पादन में होती है।''*

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र विज्ञान, कला, साहित्य, संगीत एवं राजनीति में सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है। किसी भी देश का बहुमुखी विकास सृजनशील व्यक्तियों पर ही आधारित होता है।

सृजनात्मकता व्यक्तित्व और बुद्धि की अपेक्षा कम अन्वेषित है। भारत में विदेशों की अपेक्षा इस क्षेत्र में कम शोध कार्य हुए है। प्राचीनकाल में इसका क्षेत्र साहित्य, संगीत, गणित आदि कुछ ही विषयों तक सीमित था परन्तु अब धीरे–धीरे इसका क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है।

वर्तमान समय के प्रतियोगितापूर्ण समय में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र सृजनात्मक मस्तिष्क की आवश्यकता है। अतः प्रत्येक देश का यह कर्त्तव्य है कि वह सृजनात्मकता को प्रश्रय देने का समुचित प्रबन्ध करें ताकि यही बालक और युवा छात्र भविष्य में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समाज को निर्देशित करने में राष्ट्र की सफलता एवं प्रगति के पथ पर ले जाने में सहायक होते है।

सृजनात्मकता के महत्व की पुष्टि करते हुए **मासलो (1945)** का कथन है कि आत्मानुभूति व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकता है यह सृजनात्मकत व्यक्ति में ही पाई जाती है। आज प्रत्येक देश में वैज्ञानिक विधियों की खोज तथा तकनीकी उपलब्धियों के लिए सृजनात्मक व्यक्तियों को ढूँढना एक आवश्यक कार्य है।

ट्रोबिज (1966) ने सृजनात्मकता के महत्व को स्पष्ट किया है कि सृजनशील व्यक्ति समाज में वह दे सकता है जो बुद्धिमान व्यक्ति नहीं। इसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति जो दे सकता है वह सृजनशील व्यक्ति नही। इसी प्रकार से कम सृजनशील व्यक्तियों की सम्पूर्ण उपलब्धियाँ, उच्च सृजनशील व्यक्ति के किसी भी उपलब्धि की बराबरी नहीं कर सकती है।

विद्यार्थी शिक्षक–प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद भी रोजगार की तलाश में इधर–उधर भटकते रहते है, जिनके ऊपर पास–पड़ोस, रिश्तेदार, दोस्तों एवं माता–पिता तथा समाज का दबाव बराबर बना रहता है। अनिश्चित भविष्य को लेकर छात्र तनाव/चिन्ता/दुश्चिंता का शिकार हो जाते है जो उनके व्यक्तित्व को बुरी तरह प्रभावित करता है।
प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्ता द्वारा शिक्षक–प्रशिक्षण की सृजनात्मकता, दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा और कोशिश की जायेगी कि ऐसे क्या कारण है कि इस स्तर के छात्रों को दुश्चिंता प्रभावित करती है जो उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करती है।
सृजनात्मकता एवं दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना शोधकर्ता का उद्देश्य एवं आवश्यकता है।
शिक्षक–प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम बहुत ही विस्तृत होता है। इस स्तर पर छात्र अपने भविष्य के प्रति सजग/सचेत रहते है। शिक्षक–प्रशिक्षण कई वर्गों में विभाजित रहता है यथा–कला वर्ग, विज्ञान वर्ग, वाणिज्य वर्ग आदि।
परीक्षाओं के आगमन के समय शिक्षक–प्रशिक्षण के छात्र अच्छे परिणाम के लिए दुश्चिंतित रहते है और अपने उद्देश्य में सफल न होने पर यही दुश्चिंता अवसाद का रूप ले लेती है जो पूर्णतः व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। यद्यपि शिक्षक–प्रशिक्षण पर दुश्चिंता का व्यक्तित्व पर प्रभाव लघुशोध नगण्य मात्रा में हुआ है। इसलिए शोधकर्ता को यह आभास हुआ कि इन चरों पर कार्य किया जा सकता है। वस्तुतः शोधकार्य पूर्ण होने पर शिक्षा जगत् में कार्य करने वाले (छात्र, अध्यापक) के साथ–साथ अभिभावक, प्रशासक आदि को लाभ मिलेगा।
जैसे–जैसे अध्ययनरत शिक्षक–प्रशिक्षण बढ़ोत्तरी करने लगता है उसका सभी प्रकार की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रकार शिक्षक–प्रशिक्षण अपना सर्वोन्मुख विकास करता हुआ अपने शब्दों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम बनता है। शनैः शैनः शिक्षक अपनी शारीरिक परिपक्वता के साथ अपने सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक क्षेत्र में विकास के लिये परिश्रम करता है। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को परिश्रम के साथ करता है परन्तु उसकी महत्वाकांक्षा और इच्छाएं पूरी नहीं होती तो एक प्रकार का मानसिक दबाव उत्पन्न होता है। जब व्यक्ति अपने कार्य तथा कार्य के परिणाम से असंतुष्ट हो जाता है तो वह अपनी असफलता के कारण कई प्रकार के तनाव लेने लगता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व को जन्म देता है या इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि असंतुष्टि व्यक्तित्व को जन्म देने में प्रमुख से उत्तरदायी होती है।

समस्या का औचित्य–
समस्या कथन–
प्रस्तुत लघु शोध में शिक्षक प्रशिक्षण की सृजनात्मकता, दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। शीर्षक है–

''शिक्षक प्रशिक्षण की सृजनात्मकता, दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की कार्यकारिणी परिभाषा–

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान–
शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान से तात्पर्य बी0एड0, बी0टी0सी0 तथा उन संस्थाओं से है जहाँ एन0सी0टी0ई0 द्वारा मान्यता प्राप्त एक वर्षीय या द्विवर्षीय कार्यक्रम का संचालन हो रहा है तथा उन्हं स्थायी सम्बद्धता प्राप्त हो।

2. सृजनात्मकता–
सृजनात्मकता एक ऐसी योग्यता है जो किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान करने के लिए नवीनतम विधियों एवं स्थितियों का सहारा लेती है।

क्रो एवं क्रो के अनुसार, ''सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।''

ड्रेवहल के शब्दों में, ''सृजनात्मकता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।''

सृजनात्मकता के मुख्य चार घटक है–
(1) प्रवाह– प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गई समस्या पर अधिकाधिक प्रत्युत्तरों से है।

(2) विविधता– विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये गये विकल्पों में विविधता से होने से है।
(3) मौलिकता– मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये विकल्पों या उत्तरों का असामान्य होने से हैं
(4) विस्तारण– विस्तारण से तात्पर्य दिये गये विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या की पूर्ति या प्रस्तुतीकरण से होता है।

दुश्चिंता–
दुश्चिंता एक मनोवैज्ञानिक और दैहिक (दार्शनिक) अवस्था है जिसमें संज्ञानात्मक, भावात्मक, व्यवहारात्मक घटक के लक्षण होते है।
दुश्चिंता की उत्पत्ति डर से होता है जब डर चिरकालिक हो जाता है तो इससे व्यक्ति में दुश्चिंता की उत्पत्ति होती है। दुश्चिंता में मानसिक स्थिति अस्पष्ट होती है लेकिन यह संचयी होता है ओर प्रत्येक क्षण यह एक खास समय तक बढ़ते ही जाता है।

3. पुरुष एवं महिला प्रशिक्षु–
शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में बी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं से है।

व्यक्तित्व
व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग साधारण बातचीत के दौरान बहुतायत से किया जाता हैं। साधारण बातचीत में प्रयुक्त 'व्यक्तित्व' शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता को इंगित करता हैं। **गिलफोर्ड के अनुसार** *''व्यक्तित्व गुणों को समन्वित रूप हैं।''* इस प्रकार आलपोर्ट महोदय ने व्यक्तित्व को 50 परिभाषाओं का विश्लेषण व वर्गीकरण किया हैं।
मानव के व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षा को वित्त पोषित एवं स्ववित्त पोषित विद्यालयों के द्वारा शिक्षा प्रदान किया जाता हैं। इसका उद्देश्य बालकों के निरन्तर वैचारिक एवं तार्किक विकास हैंतु आधारशिला तैयार करना होता हैं। प्रस्तुत शोध बी0ए0, एम0ए0, बी0एस0सी0, एम0एस0सी0, बी0काम0, बी0एड्0, एम0एड्0 आदि शिक्षकों को व्यक्तित्व के रूप में माना गया हैं।

अध्ययन के उद्देश्य–
कसी भी कार्य को करने का एक निश्चित उद्देश्य होता है। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–
1. एकसूत्रता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सुसम्बद्धता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. मौलिकता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. संभ्रान्तियों के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
6. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
7. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
8. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
9. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
10. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना–
लघुशोध प्रबन्ध को एक वैज्ञानिक रूप देने तथा समस्या के हल के लिए इस शोध प्रबन्ध को निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गयी है।
1. एकसूत्रता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।
2. सुसम्बद्धता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।
3. मौलिकता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।

4. संभ्रान्तियों के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।
5. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
6. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
7. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
8. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
9. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
10. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

अध्ययन की सीमांकन–

प्रस्तुत लघु शोध में इलाहाबाद जनपद में स्थित बी0एड0 प्रशिक्षार्थियों को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

1. छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय के अन्तर्गत दो शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं को लिया गया है जो निम्न है–
   (1) बसन्त महाविद्यालय तेन्दुई, सराय इनायत, इलाहाबाद।
   (2) जगपत सिंह सिंगरौर डिग्री कालेज, जे0पी0 नगर, इलाहाबाद।
   (3) नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, जमुनीपुर, कोटवा, दुबावल, इलाहाबाद
   (4) के0पी0 बी0एड0 प्रशिक्षण केन्द्र, इलाहाबाद।
2. इन महाविद्यालयों की महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता एवं दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए 200 महिला तथा 200 पुरुष प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है।

शोध अभिकल्प–

प्रस्तुत अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य **''शिक्षक प्रशिक्षण की सृजनात्मकता, दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''** करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित कार्य योजना का निर्माण किया गया–

1. अध्ययन विधि
2. जनसंख्या
3. न्यादर्श
4. उपकरण
5. प्रदत्तों का संकलन
6. सांख्यिकीय विधियाँ

अध्ययन विधि–

प्रस्तुत लघुशोध में अनुसंधानकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपनाया है। **सर्वेक्षण विधि** से निकले हुए निष्कर्षो का सामान्यीकरण किया जा सकता है। सर्वेक्षण विधि से किसी भी क्षेत्र की तात्कालिक परिस्थिति की सही जानकारी हो जाती है जिसमें उस क्षेत्र में तात्कालिन परिस्थिति की सही जानकारी हो जाती है। जिसमें उस क्षे में शीघ्र सुधार किया जा सकता है। सर्वेक्षण विधि को शैक्षिक समस्याओं के समाधान में सर्वाधिक रूप से प्रयुक्त की जाने वाली विधि के रूप में स्वीकार किया जाता है। सर्वेक्षण विधि श्रम, धन व समय की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है।

शोध की शून्य परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध में उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. एकसूत्रता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. सुसम्बद्धता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. मौलिकता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
4. संभ्रान्तियों के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
6. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
7. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
8. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
9. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
10. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही लें

जनसंख्या–

प्रस्तुत लघुशोध में शोधार्थी द्वारा इलाहाबाद जनपद में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण (बी0एड0) महाविद्यालयों को शोध की जनसंख्या माना गया हैं।

अध्ययन का न्यादर्श–

प्रस्तुत लघुशोध कार्य हेतु अनुसंधानकर्त्ता ने इलाहाबाद जिले के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है तथा इनमें से 200 पुरुष प्रशिक्षु तथा 200 महिला प्रशिक्षु का चयन किया है।

उपकरण–

सृजनात्मकता मापनी–

प्रस्तुत लघुशोध में सृजनात्मकता के मापन के लिए डा0 एस0पी0 मल्होत्रा (कुरुक्षेत्र, विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) एवं डॉ0 सुचेता कुमारी (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

दुश्चिंता मापनी–

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध में दुश्चिंता के मापन के लिए ए0के0पी0 सिन्हा और एल0एन0के0 सिन्हा (पटना) द्वारा बनाये गये सिन्हा व्यापक विस्तृत दुश्चिंता परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत लघुशोध में व्यक्तित्व के मापन के लिए स्वनिर्मित ''व्यक्तित्व प्रश्नावली'' पुस्तिका का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ–

सांख्यिकीय विश्लेषण के मध्यमान, मानक विचलन, टी–अनुपात एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

मध्यमान $(mean) = \frac{\Sigma fx}{N}$

मानक विचलन $S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma f\left(x - m'\right)^2}{N}}$

टी–अनुपात या सी.आर. टेस्ट –

$$t \text{ or } C.R. = \frac{m_1 \sim m_2}{\sigma D}$$

निष्कर्ष–

निष्कर्ष–1 एकसूत्रता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

निष्कर्ष–2 सुसम्बद्धता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–3 मौलिकता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–4 संभ्रान्तियों के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–5 शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–6 शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–7 शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–8 शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–9 शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–10 शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ–

मनुष्य द्वारा बुद्धिमता पूर्ण किया गया कार्य निरूद्देश्य का महत्व भी उसकी उपयोगिता पर ही निर्भर करता है। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में किया गया शैक्षिक अनुसंधान तक तक सफल और सार्थक सिद्ध नहीं हो सकता जब तक उसकी शैक्षिक उपयोगिता न हो, सृजनात्मकता के परीक्षण का सर्वाधिक उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में ही किया जाता है। प्रस्तुत शोध की उपयोगिता निम्नलिखित महत्वों के कारण और भी बढ़ जाता है क्योंकि–

1. सृजनात्मकता बालकों की पहचान कर लेने के उपरान्त सम्बन्धित विषयों की रूचियों के अनुसार उपयुक्त कार्यों में लगाया जा सकता है, जिससे वे उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकेंगे।
2. प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत सृजनात्मकता स्तर को ज्ञात करके उनको व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर अधिगम कराया जा सकता है।
3. सृजनात्मकता बालकों को अभिप्रेरित कर उनकी प्रतिभा को अधिकतम् बिन्दु पर बढ़ाया जा सकता है।
4. प्रशिक्षाणर्थियों के व्यवहार की जाँच की जा सकती है।
5. व्यवहार के किसी भी क्षेत्र में श्रेष्ठता का पता लगाया जा सकता है।
6. बुद्धि की गहराई का पता लगाकर उसे आगे बढ़ाने में सहायता दी जा सकती है।
7. इसके द्वारा प्रशिक्षणार्थियों में समायोजन क्षमता का मापन किया जा सकता है।
8. सृजनात्मकता मापन के आधार पर व्यक्तित्व परीक्षण किया जा सकता है।
9. विशिष्ट योग्यता की जानकारी प्राप्त हो सकती है और तद्नुकूल व्यवसायिक ज्ञान तथा निर्देशन देने की व्यवसायिक ज्ञान तथा निर्देशन देने की व्यवस्था की जा सकती है।
10. कलाकार, वैज्ञानिक, उत्पादक बनने के लिए प्रयोज्यों की पहचान की जा सकती है।

दुश्चिंता एक महत्वपूर्ण चर है जो कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है। अतएव शिक्षा को रोजगारपरक बनाकर छात्रों की दुश्चिंता को कम किया जा सकता है जिससे छात्रों के व्यक्तित्व को उत्तम बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम अभिभावकों, शिक्षकों, छात्रों तथा शैक्षिक प्रशासकों के लिए इस दृष्टि से उपयोगी है कि किसी भी छात्र के दुश्चिंता का परिणाम उसके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। और इस स्तर पर (शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर) प्रशिक्षुओं के साथ अभिभावकों, शिक्षक, समाज उनके साथ मित्रवत व स्नेहपूर्ण व्यवहार करें और उनकी हर समस्या का समाधान उचित ढंग से किया जाये तो दुश्चिंता को कम किया जा सकता है। इस समय अभिभावकों, अध्यापकों तथा समाज को मित्रवत व स्नेहपूर्ण व्यवहार प्रशिक्षुओं के साथ करना चाहिए।

1. दुश्चिंता को कम करने के लिए प्रशिक्षुओं में उद्देश्यपरक भावना का विकास करना चाहिए।
2. हमारी शिक्षा व्यवस्था रोजगारपरक होना चाहिए जिससे प्रशिक्षुओं में अनिश्चितता का भाव विकसित न होने पाये।
3. आज शिक्षा को आदर्शवादी न होकर प्रयोजनवादी होना चाहिए जिससे प्रशिक्षुओं में दुश्चिंता का भाव प्रकट नही होगा।
4. प्रशिक्षुओं के लिए उचित वातावरण होना चाहिए जिससे वे चिन्ता मुक्त वातावरण में रहकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सके।
5. हमारी शिक्षा दिशा विहीन न होकर दिशा का बोध कराने वाली होनी चाहिए जिससे प्रशिक्षुओं में दुश्चिंता को कम किया जा सकता है।

6. हमारी शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रम बालकेन्द्रित होना चाहिए जिससे छात्र/छात्राएं अध्ययन में रूचि ले और आशावादी बन सके।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव–

शोध कार्य के विवेचन के आधार पर शोधकर्त्ता ने भावी अनुसंधान हेतु कुछ सुझाव प्रस्तुत किये है। जो अधोलिखित है–

1. यह अनुसंधान माध्यमिक स्तर पर किया जा सकता है।
2. यह अनुसंधान स्नातक स्तर पर किया जा सकता है।
3. यह अनुसंधान परास्नातक स्तर पर किया जा सकता है।
4. यह अनुसंधान उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
5. यह अनुसंधान उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के शिक्षकों पर किया जा सकता है।
6. यह अनुसंधान विधि एवं वाणिज्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
7. विभिन्न सम्प्रदायों के आधार पर व्यापक रूप से अध्ययन किया जा सकता है।
8. यह अनुसंधान केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं राजकीय विश्वविद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों पर किया जा सकता है।
9. यह अनुसंधान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों पर किया जा सकता है।
10. यह अनुसंधान आई0आई0टी0 एवं यू0पी0सीट इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
11. यह अनुसंधान शासकीय व अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों पर किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **अग्रवाल, उमेशचन्द्रः** *बाल श्रम विभीषिक,* कुरूक्षेत्र, नवम्बर 2006
2. **अस्थाना, विपिन एवं अन्य (2008),** *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यकीय,* आगराः ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, पृष्ठ, पृष्ठ संख्या–542
3. **अवस्थी, सुमन (2001),** *शिक्षक अभिभावक एवं छात्रों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा जागरूकता अभिकरणों का योगदान,* शोध उपाधि, शिक्षा, कानपुर, सी0एस0जे0 एम0यू0, पृष्ठ संख्या–205ण
4. **गुप्ता, एस0पी0 (2008),** *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ संख्या–313
5. **गुप्ता, एस0पी0 (2008),** *व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यकीय विधियाँ,* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ संख्या–413
6. **गंगल, महेश (2002),** *राजस्थान के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के संगठनात्मक वातावरण एवं इसका प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैली पर प्रभाव का अध्ययन,* शोध उपाधि, शिक्षा, कानपुर, सी0एस0जे0 एम0यू0, पृष्ठ संख्या–221
7. **पन्त, नवीन (नवम्बर 1999), बाल श्रम समस्यायें और समाधान,** योजना।
8. **बूरा, नीरा,** *भारतीय बाल श्रमिकों का एक प्रतिवेदन, संगोष्ठी,* नई दिल्ली।
9. **भट्नागर, सुरेश (2006),** *भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास,* मेरठः आर0लाल बुक डिपो, पृष्ठ संख्या–223
10. **राय, पारसनाथ (2008),** *अनुसंधान परिचय,* आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पृष्ठ संख्या–201
11. **सारस्वत, मालती (2004),** *शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा,* इलाहाबाद आलोक प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–643
12. **सिंह, अरूण कुमार (2008),** *उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान,* दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास, पृष्ठ संख्या–813
13. **शर्मा, आर0ए0 (2007),** *शिक्षा में अनुसंधान मेरठः* आर0लाल बुक डिपो।
14. **अब्राहम, एम0 (1985),** *ए स्टडी आफ सरटेन साइको–सोसल कोरिलेटेड ऑफ मेण्टल स्टेट्स ऑफ यूनिवर्सिटी इण्टरानिस ऑफ, केरलाः पी–एच0डी0, केरला यूनिवर्सिटी,* एम0बी0 बुच, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन।
15. **असवाल, सीमा (2002),** लाइफ स्टाइल स्ट्रेस एण्ड कोपिंग विहैवियर ऑफ वर्किंग बुमेन, पी–एच0डी0 (साइको), कानपुरः सी.एस.जे.एम.विश्वविद्यालय।